: संस्तुति :

मैं संस्तुति करता हूँ कि श्री. गोमटेश्वर आण्णासाहेब माली का ''सुरेंद्र वर्मा के नाटकों में प्रस्तुत [illegible], रंगमंच एवं काम-चेतना'' लघु शोध-प्रबंध परीक्षणार्थ आग्रेषित किया जाए ।

कोल्हापुर

दिनांक 31 DEC 2001

डॉ. अर्जुन गणपति चव्हाण
अध्यक्ष
हिंदी विभाग
शिवाजी विश्वविद्यालय,
कोल्हापुर - 416 004

डॉ. अर्जुन गणपति चव्हाण
एम.ए.,बी.एड.,पीएच्.डी.
प्रपाठक एवं अध्यक्ष,
हिंदी विभाग
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर .

: प्रमाणपत्र :

प्रमाणित किया जाता है कि श्री. **गोमटेश्वर आण्णासाहेब माळी** ने मेरे निर्देन में **''सुरेंद्र वर्मा के नाटकों में प्रस्तुत , रंगमंच एवं काम-चेतना''** लघु शोध-प्रबंध शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर की एम्. फिल. उपाधि के लिए लिखा है । पूर्व नियोजनानुसार संपन्न इस कार्य में शोध-छात्र ने मेरे सुझाओं का पूर्णत: पालन किया है । जो तथ्य इस लघु शोध-प्रबंध में प्रस्तुत किए हैं, मेरी जानकारी के अनुसार सही हैं । शोध-छात्र के कार्य से मैं पूरी तरह संतुष्ट हूँ ।

कोल्हापुर

दिनांक 31 DEC 2001

शोध-निर्देशक

(डॉ. अर्जुन गणपति चव्हाण)
अध्यक्ष,
हिंदी विभाग,
शिवाजी विश्वविद्यालय,
कोल्हापुर-४१६००४.

: प्रख्यापन :

"सुरेंद्र वर्मा के नाटकों में प्रस्तुत [illegible], रंगमंच एवं काम-चेतना" लघु शोध-प्रबंध मेरी मौलिक रचना है, जो एम्. फिल. (हिंदी) उपाधि के लिए प्रस्तुत की जा रही है । प्रस्तुत रचना इससे पहले इस विश्वविद्यालय या अन्य किसी भी विश्वविद्यालय की उपाधि के लिए प्रस्तुत नहीं की गई है ।

कोल्हापुर

दिनांक 31 DEC 2001

शोध-छात्र

(श्री. गोमटेश्वर आण्णासाहेब माळी)

प्राक्कथन

एम.ए. उत्तीर्ण होने के पश्चात जब मुझे एम्.फिल. में प्रवेश मिला तब कक्षा में हमें बताया गया कि आप लोगों को लघु शोध-प्रबंध के संदर्भ में रूपरेखा तैयार करनी है । तब मैंने ग्रंथालय में जाकर अनेक नाटक पढ़े । उनमें से मुझे सुरेंद्र वर्मा का ' सूर्य की अंतिम किरण से सूर्य की पहली किरण तक ' नाटक ने बहुत आकर्षित किया और मैं सुरेंद्र वर्मा के साहित्य के प्रति प्रभावित हुआ । तब मैंने उनका अन्य नाट्य साहित्य पढ़ना शुरु किया । कहना जरुरी नहीं है कि सुरेंद्र वर्मा मुझे एक सशक्त नाटकार के रूप में दिखायी दिए । इसलिए उनके साहित्य द्वारा उनसे अधिक परिचित होने हेतु, मैंने उनके नाटकों का अध्ययन करना चाहा । श्रद्धेय गुरुवर्य डॉ. अर्जुन चव्हाण जी, अध्यक्ष, हिंदी विभाग, शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर से मिलकर मैंने विषय चयन की चर्चा की तो उन्होंने " सुरेंद्र वर्मा के नाटकों में प्रस्तुत अभिनय रंगमंच एंव काम-चेतना " विषय को सिर्फ स्वीकृति ही नहीं दी बल्कि प्रेरणा एवं प्रोत्साहन भी दिया । मार्गदर्शक के रूप में आपका उपलब्ध होना मेरे लिए बहुत ही आनंददायी बात सिद्ध हुई । विषय चयन के पीछे श्रद्धेय गुरुवर्य डॉ. अर्जुन गणपति चव्हाण जी के सहयोग, प्रेरणा तथा प्रोत्साहन के कारण ही मेरा अनुसंधान कार्य एवं यह लघु शोध-प्रबंध इन पृष्ठों पर साकार हो सका ।

इस विषय का अनुसंधान करते समय मेरे सामने निम्नलिखित प्रश्न खड़े हुए --

1. सुरेंद्र वर्मा ने अपने जीवन में किस प्रकार के साहित्य की निर्मिति की ?
2. सुरेंद्र वर्मा के नाटकों का मूल विषय कौनसा है ?
3. अभिनय की दृष्टि से सुरेंद्र वर्मा के नाटक किस प्रकार हैं ?
4. सुरेंद्र वर्मा के नाटकों का रंगमंच किस प्रकार है ?
5. सुरेंद्र वर्मा के नाटकों में चित्रित स्त्री-पुरुष संबंध किस तरह के हैं ?

अध्ययन ~~करने~~ के उपरांत उपर्युक्त प्रश्नों के जो उत्तर मिले हैं उन्हें उपसंहार में लिख दिया है । अध्ययन की सुविधा की दृष्टि से मैंने अपने लघु शोध-प्रबंध को निम्नांकित अध्यायों में विभाजित कर अपने विषय का विवेचन प्रस्तुत किया है --

प्रथम अध्याय में सुरेंद्र वर्मा के साहित्य परिचय संक्षिप्त रूप में किया है । उनका जन्म, शिक्षा तथा उनके साहित्यिक कृतियों तथा प्राप्त सम्मानों के बारे में जानकारी दी है । अध्याय के अंत में प्राप्त निष्कर्ष दिए हैं ।

द्वितीय अध्याय में सुरेंद्र वर्मा के सारे नाटकों का विषयगत विवेचन प्रकाशन-क्रम के अनुसार प्रस्तुत किया है । नाटकों का विवेचन करते समय उनके हर नाटक का संक्षिप्त परिचय देकर अंत में नाटक के बारे में निष्कर्ष दिए हैं । इसमें विवेच्य नाटक किस कोटि में आते हैं, नाटक के नायक-नायिका, प्रमुख पात्र आदि बातों का विवेचन प्रस्तुत है । अध्याय के अंत में प्राप्त निष्कर्ष दिए हैं ।

तृतीय अध्याय के अंतर्गत सुरेंद्र वर्मा के नाटकों में प्राप्त अभिनय को उद्घाटित किया है । इसमें अभिनय शब्द की व्युत्पत्ति, अर्थ एवं परिभाषाएँ देकर विवेच्य नाटकों में प्राप्त अभिनय को अभिनय के चार प्रकारों के माध्यम से प्रस्तुत किया है । अध्याय के अंत में प्राप्त निष्कर्ष दिए हैं ।

चतुर्थ अध्याय में सुरेंद्र वर्मा के नाटक रंगमंचीयता के दृष्टि से कैसे हैं, इस बात पर प्रकाश डाला है । इसमें विवेच्य नाटक में प्राप्त रंगनिर्देश, रंगसज्जा, प्रकाश-योजना, ध्वनि-संकेत, गीत-संगीत-योजना, संवाद-योजना, अंक-योजना आदि बातों को स्पष्ट किया है । अध्याय के अंत में प्राप्त निष्कर्षों को दर्ज किया है ।

पंचम अध्याय के अंतर्गत सुरेंद्र वर्मा के विवेच्य नाटकों में आये स्त्री-पुरुष संबंधों को काम-चेतना के आधार पर व्याख्यायित किया है । प्रस्तुत अध्याय में ' काम ' शब्द की व्युत्पत्ति, अर्थ, परिभाषा देकर विवेच्य नाटकों में प्राप्त स्त्री-पुरुष संबंधों को उजागर करने का प्रयास किया है । इसमें विवेच्य नाटकों में प्राप्त विवाह पूर्व काम संबंध तथा विवाहेत्तर काम-संबंधों का विस्तार से विवेचन विश्लेषण किया है । अध्याय के अंत में प्राप्त निष्कर्षों को स्पष्ट किया है ।

तत्पश्चात ' उपसंहार ' दिया है । इसमें लघु शोध-प्रबंध का सार रूप दिया है । वर्मा जी के नाटकों में प्रस्तुत अभिनय, रंगमंच एवं काम-चेतना का अध्ययन करने के बाद जो निष्कर्ष मेरे हाथ लगे

SHIVAJI UNIVERSITY KOLHAPUR

उन्हें दिया है । इसमें पूर्व विवेचित सभी अध्यायों के प्राप्त तथ्यों के आधार पर निकाले गए निष्कर्ष दिए हैं । उसके बाद संदर्भ ग्रंथ- सूची दी है ।

इस लघु शोध-प्रबंध की पूर्ति में मेरी प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष सहायता करनेवाले और प्रोत्साहित करनेवाले हित-चिंतकों के प्रति कृतज्ञता प्रकट करना मैं अपना प्रथम कर्तव्य समझता हूँ ।

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध श्रद्धेय गुरुवर्य डॉ. अर्जुन चव्हाण जी, अध्यक्ष, हिंदी विभाग, शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर के उदार एवं प्रतिभाशाली व्यक्तित्व के प्रेरक निर्देशन का फल है । यदि आपका मार्गदर्शन न मिलता तो यह कार्य असंभव हो जाता । आपका मार्गदर्शन ही मुझे हर वक्त प्रेरणा तथा बल देता रहा, जिसकी वजह से यह कार्य में पूर्ण कर सका । आप हर वक्त काम में व्यस्त रहते थे फिर भी समय-समय पर आपने मेरे लेखन की त्रुटियों को दूर कर अत्मीयता के साथ मौलिक और सही दिशा में मार्गदर्शन किया । आपके प्रति शब्दों में कृतज्ञता करना असंभव है । मैं आपके प्रति हरदम कृतज्ञ रहूँगा और भविष्य में भी आपके आशीर्वाद एवं मार्गदर्शन की कामना करूँगा ।

मेरी शिक्षा-दीक्षा की पूर्ति के लिए अनंत कष्ट उठाने वाले मेरे पिता श्री. आण्णासाहेब माळी, माता श्रीमती प्रमिला माळी, बहन- भारती और भाई- सागर, पत्नी वनिता और मेरा दिवंगत भाई समीर की साह्यता तथा शुभ-कामनाएँ हमेशा मेरे साथ ही है । साथ ही मेरे दोस्त- रामराव पाटील, सतिश पाटील, श्री जाधव सर, साताप्पा चव्हाण, कुबेर माळी आदि का इस लघु शोध-प्रबंध के कार्य की पूर्ति में विशेष सहयोग प्राप्त हुआ है । अत: इन सभी का मैं हमेशा आभारी रहूँगा ।

शिवाजी विश्वविद्यालय के मानद हिंदी अध्यापक श्री. अरविंद पोतदार, श्रीमती रजनी भागवत तथा श्री. जी. एस. हिरेमठ जी से मुझे प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध के अध्ययन में यथायोग्य और अनमोल मार्गदर्शन के साथ-साथ प्यार और स्नेह प्राप्त हुआ है । प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध के लिए आवश्यक संदर्भ ग्रंथों की प्राप्ति मुझे बैरिस्टर बालासाहब खर्डेकर ग्रंथालय, कोल्हापुर, शहाजी कॉलेज, कोल्हापुर से हुई । अत: इन ग्रंथालयों के सभी कर्मचारियों का मैं ऋणी हूँ ।

इस लघु शोध-प्रबंध का आकर्षक एवं यथोचित रूप में समय पर टंकण करनेवाले श्री. अनिल साळोखे जी का भी मैं कृतज्ञ हूँ । साथ ही जिन ज्ञात-अज्ञात लोगों का सहयोग और शुभ-कामनाएँ मुझे प्राप्त हुई, उनके प्रति हार्दिक कृतज्ञता प्रकट करते हुए मैं इस लघु शोध-प्रबंध को विनम्रतापूर्वक परीक्षणार्थ प्रस्तुत करता हूँ ।

कोल्हापुर ।

दिनांक :

शोध - छात्र

(श्री. गोमटेश्वर आण्णासाहेब माळी)

: अनुक्रमणिका :

प्रथम अध्याय : सुरेंद्र वर्मा का साहित्यिक परिचय ।

विषय-प्रवेश

1.1 सृजनात्मक साहित्यकार : सुरेंद्र वर्मा

1.2 महानगर की मँहगी जिंदगी जीनेवाला रचनाकार

1.3 जन्म एवं शिक्षा

1.4 सुरेंद्र वर्मा : साहित्यिक परिचय

1.4.1 कहानी संग्रह

1.4.2 उपन्यास

1.4.3 एकांकी साहित्य

1.4.4 व्यंग्य साहित्य

1.4.5 काव्य

1.4.6 अन्य साहित्य

1.4.7 नाटक

द्वितीय अध्याय : सुरेंद्र वर्मा के नाटकों का विषयगत विवेचन ।

2.1 सेतुबंध

2.2 द्रौपदी

2.3 सूर्य की अंतिम किरण से सूर्य की पहली किरण तक

2.4 आठवाँ सर्ग

2.5 शकुंलता की अंगूठी

समन्वित निष्कर्ष

तृतीय अध्याय : विवेच्य नाटकों में प्रस्तुत अभिनेयता

3.1 'अभिनय' शब्द का कोशगत अर्थ

3.2 'अभिनय' शब्द की व्युत्पत्ति

3.3 अभिनय की परिभाषाएँ

3.3.1 अभिनय की अंग्रेजी विद्वानों द्वारा प्रस्तुत परिभाषा

3.3.2 अभिनय की संस्कृत विद्वानों द्वारा प्रस्तुत परिभाषा

3.3.3 अभिनय की हिंदी विद्वानों द्वारा प्रस्तुत परिभाषा

3.4 नाटक और अभिनय का संबंध

3.5 अभिनय के गुण

3.5.1 अनुकरण नैपुण्य

3.5.2 दृश्य सौष्ठव

3.5.3 श्रुति माधुर्य

3.5.4 परिहास

3.6 अभिनय के प्रकार

3.6.1 आंगिक अभिनय

3.6.2 वाचिक अभिनय

3.6.3 सात्विक अभिनय

3.6.4 आहार्य अभिनय

निष्कर्ष

चतुर्थ अध्याय : विवेच्य नाटकों में प्रस्तुत रंगमंचीयता ।

4.1 मंचसज्जा

4.1.1 मंचसज्जा के प्रकार

4.1.1.1 चित्रांकित मंच-सज्जा

4.1.1.2 प्रकृतिवादी मंच-सज्जा

4.1.1.3 प्रतीक मंच-सज्जा

4.2 ध्वनि संकेत

4.2.1 लोगों का कोलाहल

4.2.2 उद्घोषक की आवाज

4.2.3 नगाड़ें की आवाज
4.2.4 नारियों के खिलखिलाहट की आवाज
4.2.5 आहट की आवाज
4.2.6 घोडों के टापों एवं हिनहिनाहट की आवाज
4.2.7 पक्षी के बोलने की आवाज
4.2.8 ट्रैफिक का शोर
4.2.9 तालियों की आवाज
4.2.10 नुपूरों की आवाज
4.2.11 घंटी की आवाज
4.2.12 टेलीफोन की आवाज
4.2.13 आभूषणों एवं वस्त्रों की सरसराहट
4.3 संगीत-योजना
4.4 गीत-योजना
4.5 बिम्ब विधान एवं प्रतिक विधान
4.6 संवाद-योजना
4.6.1 संवाद का वैविध
4.6.1.1 उपमात्मक संवाद
4.6.1.2 सूचनात्मक खण्डित संवाद
4.6.1.3 एकालाप संवाद
4.6.1.4 टेलीफोन द्वारा संवाद
4.6.1.5 छोटे एवं लघु संवाद
4.6.1.6 लंबे संवाद
4.6.1.7 सांकेतिक संवाद
4.7 प्रकाश योजना
4.8 वेश-भूषा एवं केश-भूषा
4.9 रंगमंचीय प्रस्तुति एवं दर्शकीय संवेदना
निष्कर्ष

पंचम अध्याय : विवेच्य नाटकों में प्रस्तुत काम चेतना ।

5.1 'काम' शब्द का अर्थ

5.2 'काम' शब्द की परिभाषाएँ

5.3 'काम' शब्द की व्यापकता

5.4 'काम' का महत्व

5.5 स्त्री-पुरुष काम संबंधों का मनोविज्ञान

5.5.1 विवाह-पूर्व काम-संबंधों में रूचि

5.5.2 वैवाहिक स्त्री-पुरुष का काम-संबंध

5.5.3 विवाहेतर काम-संबंध

5.5.3.1 पति के विवाहेतर काम-संबंध

5.5.3.2 पत्नी के विवाहेतर काम-संबंध

5.5.4 उन्मुक्त प्रेम संबंध

5.5.5 समाजमान्य विवाहेतर काम-संबंध

निष्कर्ष

उपसंहार ।

संदर्भ-ग्रंथ-सूची ।